Marwari College, Darbhanga
Hand written lecture 8
By
Dr. S. K. Suman, Asst. Prof., Dept. of psychology

Page No. 59
Date 18/04/20

For
Class- B.A, Part-I, Psychology(H), Paper-I
Ch-4, Learning, Topic- Role of Motivation in Learning
(अधिगम में अभिप्रेरणा की भूमिका)

शिक्षार्थियों में स्वस्थ प्रतियोगिता की भावना का विकास, उन्हें अधिक ज्ञान का अर्जन करने के लिए प्रेरित करता है। अधिगम की प्रक्रिया में अभिप्रेरणा बालकों के व्यवहार को एक निश्चित दिशा प्रदान करती है। अभिप्रेरित व्यवहार उद्देश्यपूर्ण और सतत होता है। अभिप्रेरणा बालकों के व्यवहार को लक्ष्य की ओर निर्देशित करती है और लक्ष्य की प्राप्ति तक जारी रहती है।

शिक्षकों एवं शिक्षामनोवैज्ञानिकों ने अभिप्रेरणा को सीखने का राजकीय मार्ग कहा है (Motivation is the royal road to learning).

सीखने की प्रक्रिया में अभिप्रेरणा के महत्व को देखते हुए कुछ प्रमुख मनोवैज्ञानिकों ने इसे इस प्रकार से व्यक्त किया है:—

Melton के अनुसार, "अभिप्रेरणा, सीखने की एक आवश्यक शर्त है।" (Motivation is an essential condition of learning.)

Anderson के अनुसार, "सीखने की प्रक्रिया अच्छी तरह तभी होगी जबकि अभिप्रेरित हो।" (Learning will proceed best if motivated.)

क्रो एवं क्रो के अनुसार, " सीखने की प्रक्रिया में अभिप्रेरणा एक केन्द्रीय कारक है।... सभी तरह के सीखने में अभिप्रेरणा के किसी प्रकार का

उपस्थित होना अनिवार्य है।" ("Motivation is the central factor.... of the Process of learning. Type of motivation must be present in all learning!")

इन मनोवैज्ञानिकों के विचारों से स्पष्ट हो जाता है कि सीखने की प्रक्रिया में अभिप्रेरणा की काफी अहमियत भूमिका है। वैसे तो कई तरह के अभिप्रेरक तथा प्रोत्साहन हैं उनमें से कुछ प्रमुख निम्नवत हैं जो अधिगम (सीखने) की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं-

(1) सीखने का उद्देश्य (purpose) :- मनोवैज्ञानिक अध्ययनों से यह स्पष्ट हुआ है कि छात्रों द्वारा सीखे जाने वाले पाठ्यविषय पर उद्देश्यपूर्ण ध्यान देने से छात्रों में समझ एवं कौशल का विकास होता है और उद्देश्यपूर्ण ध्यान न देने से किसी पाठ या विषय को मात्र रट कर सीखने से न तो उसमें उचित कौशल एवं समझ का विकास नहीं हो पाता है। यह इस बात पर भी निर्भर करता है कि छात्र कौन से विषय की आवश्यकता एवं अभिकार्य उपयोगिता पर दिए गए आवश्यक निर्देश पर मनोवृत्ति भी निर्भर करता है इससे स्पष्ट होता है कि छात्रों में सीखने का उद्देश्य एक प्रबल अभिप्रेरक है।

(2) पुरस्कार एवं दंड (Reward and Punishment):

Scanned with CamScanner

Thorndike ने अपने Law of effect में स्पष्ट किया है कि किसी विषय को सीखने के लिए प्रेरणा आवश्यक है। अर्थात सीखने की प्रक्रिया पर पुरस्कार एवं दंड का प्रयोग किसी विषय को सिखाने में सर्वाधिक किया जाता है। पुरस्कार शाब्दिक (Verbal), जैसे - प्रशंसा करके या सांकेतिक (Symbolic), जैसे - बैज, मेडल, तगमा तथा प्रमाणपत्र देकर या आर्थिक (Material), जैसे - नगद रुपया देकर प्रदान किया जाता है। दंड का स्वरूप - शाब्दिक जैसे - डाँट, आलोचना, तथा शारीरिक, जैसे - एक पैर पर कुछ समय तक खड़ा रहना, कान पकड़कर उठ-बैठ करना आदि हो सकता है। अर्थात सीखने की क्रिया पर पुरस्कार तथा दंड दोनों का अनुभव क्रमशः प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से पड़ता है।

पुरस्कार के दो रूप है - (i) भौतिक पुरस्कार (ii) मौखिक पुरस्कार इसी प्रकार दंड के दो रूप है - (i) शारीरिक दंड (ii) मौखिक दंड।

Throndike के अनुसार बच्चों के शिक्षण के लिए मौखिक पुरस्कार की अपेक्षा भौतिक पुरस्कार अधिक लाभप्रद है।

(iii) प्रशंसा तथा निन्दा (Praise and Reproof) :-

मनोवैज्ञानिकों ने Learning में प्रशंसा एवं निन्दा को भी एक महत्वपूर्ण अभिप्रेरक माना है। स्कीनर (Skinner) ने शाब्दिक धनात्मक पुरस्कार को प्रशंसा की संज्ञा दी है तथा शाब्दिक ऋणात्मक पुरस्कार को निंदा की संज्ञा दी है।

Scanned with CamScanner

Hurlock (हरलॉक) ने मानव शिक्षण पर प्रशंसा तथा निन्दा के प्रभाव को निर्धारित करने के लिए Matched children (समान बच्चों) पर प्रयोग किया। उन्हें चार समूहों में बाँट दिया गया —

(i) प्रशंसित समूह (ii) निंदित समूह
(iii) उपेक्षित समूह (iv) नियंत्रित समूह

सभी समूह के बच्चों को गणित समस्याओं का समाधान करने के लिए कहा गया, देखा गया कि नियंत्रित समूह की अपेक्षा उपेक्षित समूह में, उपेक्षित समूह की अपेक्षा नियंत्रित समूह में तथा नियंत्रित समूह की अपेक्षा प्रशंसित समूह में कार्यकुशलता अधिक पाई गई।

इस प्रयोग के आलोक में हरलॉक ने यह निष्कर्ष प्राप्त किया कि प्रेरक प्रोत्साहन के कारण सीखने की कुशलता बढ़ती है।

(4) सफलता एवं असफलता (Success & failure):
सफलता तथा असफलता से संबंधित प्रयोगों से स्पष्ट हुआ है कि सफलता से सीखने की क्रिया प्रचालित होती है, शक्ति निर्मुक्त होती है तथा सीखने के प्रति मनोवृत्ति अनुकूल बनती है। इसके विपरीत असफलता से व्यक्ति निराशा एवं हतोत्साहित अनुभव करता है।

बीटराइस लोन्ला ने अपने प्रयोग में देखा कि सफलता के कारण सीखने की कुशलता बढ़ गई, जबकि असफलता के कारण कुशलता घट गई।

Contd.